

कला, वाणिज्य
महाविद्यालय वडूज
मांडवे अखिलेनी वाल्मिक

कक्षा - बी. हा. भाग - III

विषय - हिंदी / रोल नं. - 54।

मार्गदर्शक शिक्षक :- साधुबी बी.टी

प्रोजेक्ट का नाम :-

'दोहरा अभिशाप' नामक आत्मकथा
उपन्यास में चित्रित देवेन्द्र कुमार बेंसन्नी
- चरित्र का विवेचन

2018-19

8/10

A-1

Page No.

Date :

प्रस्तावना

कथानक संग्रहण का प्रमुख उद्देश्य पात्रों की चरित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन करना होता है। उपन्यासकार अपनी अनुभूति के आधार पर चरित्र-रूपरेखा अंकित करता है। पात्रों के राग, विराग, संघर्ष, दशा, कसौटी तथा शवेदनशीलता आदि स्वभाविक गुणों का तथा हिंसा, वाच्यता, क्रूरता, अनुकारता आदि दुर्गुणों का चित्रण यथार्थ के धारातल पर करता है।

कौशल्या नैसंती का दोहरा अभिवापक वालित जीवन को अभिव्यक्त करने में सफल हुआ है। इसमें पात्रों की बहुलता ही कौशल्या जी ने कुल-मिलाकर पांच छह चरित्रों का संपूर्ण परिवेश पाठकों से कराया है। परंतु अन्य जितने भी गौण पात्र हैं वे अपने परिवेश, तथा अपने समाज का प्रतिनिधित्व करने कसौटी में अत्यंत सफल अत्यंत सफल हुआ है। लेखिका के यथार्थ जीवन की भावभूमि पर आकार हुआ इस उपन्यास में चरित्र-रूपरेखा सशक्त रूप में प्रस्तुत हुई है। कौशल्या जी ने अपने भोगे हुए यथार्थ को आत्मकथात्मक उपन्यास के रूप में पाठकों के सामने रखा है। उन्होंने व्यक्तिवाद स्तर पर अन्य चरित्रों के आंतरिक ढंकों का सूक्ष्म और विस्तृत वर्णन किया है।

Page No.

Date :

देवेन्द्र का परिचय

देवेन्द्रकुमार बैसन्ती लेखिका कौरसल्याजी के पति हैं। वे बिहारी के खर्डिया नामक गाँव के निवासी थे। उनके माता पिता की मृत्यु हुई थी। उनकी दो छोटी बहने तथा एक भाई था। माँ-बाप के अचपल में ही देवेन्द्र की आदी कर दी थी। उसकी पत्नी हमेशा विमार रहती थी। उसे दो-तीन बच्चे भी हुए परंतु वे जिवित नहीं रहे। वह दूसरी आदी करना चाहता था। खुद उच्चशिक्षित था। इसलिये पढी-लिखी पत्नी चाहता था। एक आधिवेगम में देवेन्द्र का परिचय कौरसल्या से हुआ था। परंतु उस वक़्त दोनों को भी खयाल नहीं आया था कि दोनों की आदी होगी। परिचय के बहुत दिनों बाद दोनों ने आदी करने का इरादा किया और राजिस्टर पदधारी से दोनों का विवाह संपन्न हुआ।



Page No.

Date :

सुशिक्षित एवं उच्चविद्याविभूषित

देवेन्द्रकुमार माम.म.माल.माल.बी. करके बनारस विश्वविद्यालय में डि.लिट.के लिए रिसर्च कर रहा था। देवेन्द्र कानपुर से निकलने वाले हिंदी अक्षर 'बावधान' और मद्रास से निकलने वाले अंग्रेजी अक्षर में लिख लिखता था। वह माम.मन.शय की रेडिकल डेमाक्रेटिक पार्टी में भी रहा। गुलावरुथा में वह बिहारी के किसानों के आंदोलन में सक्रिय रहा था और जेल भी गया था। वह यू.पी. बोडयूलकास्ट फेडरेशन का अध्यक्ष था। इस प्रकार देवेन्द्र उच्चविद्याविभूषित बहुआयामी व्यक्तित्व रहा है।

पत्नी का शोषण

करनेवाला

सुशिक्षित देवेन्द्र पत्नी का हर तरह से शोषण करता हुआ दिखाई देता है। शादी के पहले कौशल्य से उसका व्यवहार मित्रवत, सहयोगपूर्ण रहा है। परंतु शादी के बाद उसमें पुरुषी अहं जागने लगता है। अपने ही घरे में रहनेवाला देवेन्द्र गृहस्थी चलाने में पत्नी से सलाह-मशवस नहीं करता। पत्नी की इच्छा, भावना खुशी की कभी कद्र नहीं करता। बात-बात पर पत्नी को गंदी-गंदी गाली देता और हात उठाता है। बड़े क्रूर तरीके से पत्नी को मारता भी था। गर्म मिराज और जिददी देवेन्द्र अपने मुँह से कहता है कि 'मैं बहुत खतान भावभी हूँ।' उनकी बहनों से पता चलता है कि वह माँ-बाप तथा पहली पत्नी को भी मारता था। देवेन्द्र कुमार के सामने उनकी बहनें भी खड़ी भी नहीं होती थी। उसके जीवन में पत्नी का स्थान बहुत नीचा था। लोखिका के बाव्दों में, देवेन्द्र कुमार के सामने उनकी बहनें भी खड़ी हैं लोखिका के बाव्दों में, देवेन्द्र कुमार को पत्नी सिर्फ खाना बनाने और उसकी वारिरीक भूख मिताने के लिहा-चाहिम थी। वह घर खर्च के लिहा पूरे पैसे नहीं देता था। पैसे अपनी अलमारी में ताले में बंद रखता है। और रोज दूध और सब्जी के लिहा गिनकर पैसे देता था। पैसे देन लसे की बात आती

Page No.



Date :

ता कुछ न कुछ कारण निकालकर झगडा करता। मारने दौडता। पत्नी को सल्ला उसके अत्याचार, शोषण से तंग आ गई थी।

उच्च मोहरे पर कार्यरत:

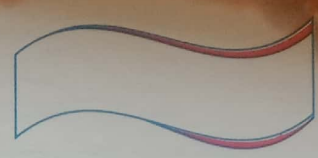

उच्चाशिक्षित देवेन्द्र की पहली नौकरी लेबर इन्स्पेक्टर की मिली। यह पोस्ट भारत सरकार की थी और राजपुत्रित थी। कुछ महिनो बाद देवेन्द्र ने यह नौकरी छोड दी कारण भारत सरकार के सूचना और सार विभाग में असिस्टंट रिसर्च ऑफिसर के पद पर उनकी नियुक्ति हो गई। वे पत्नी और बच्चों के साथ दिल्ली में रहने लगे। दिल्ली में आठ वर्ष रहने के बाद उनका तबादला भोपाल हो गया। वहाँ से देवेन्द्रकुमार पंचवर्षीय योजना के प्रसार-प्रचार के लिए पूरे मह्य प्रदेश के लिए नियुक्ति हो गये।

colors



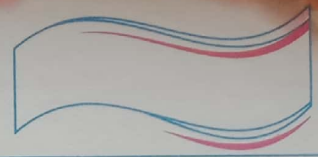
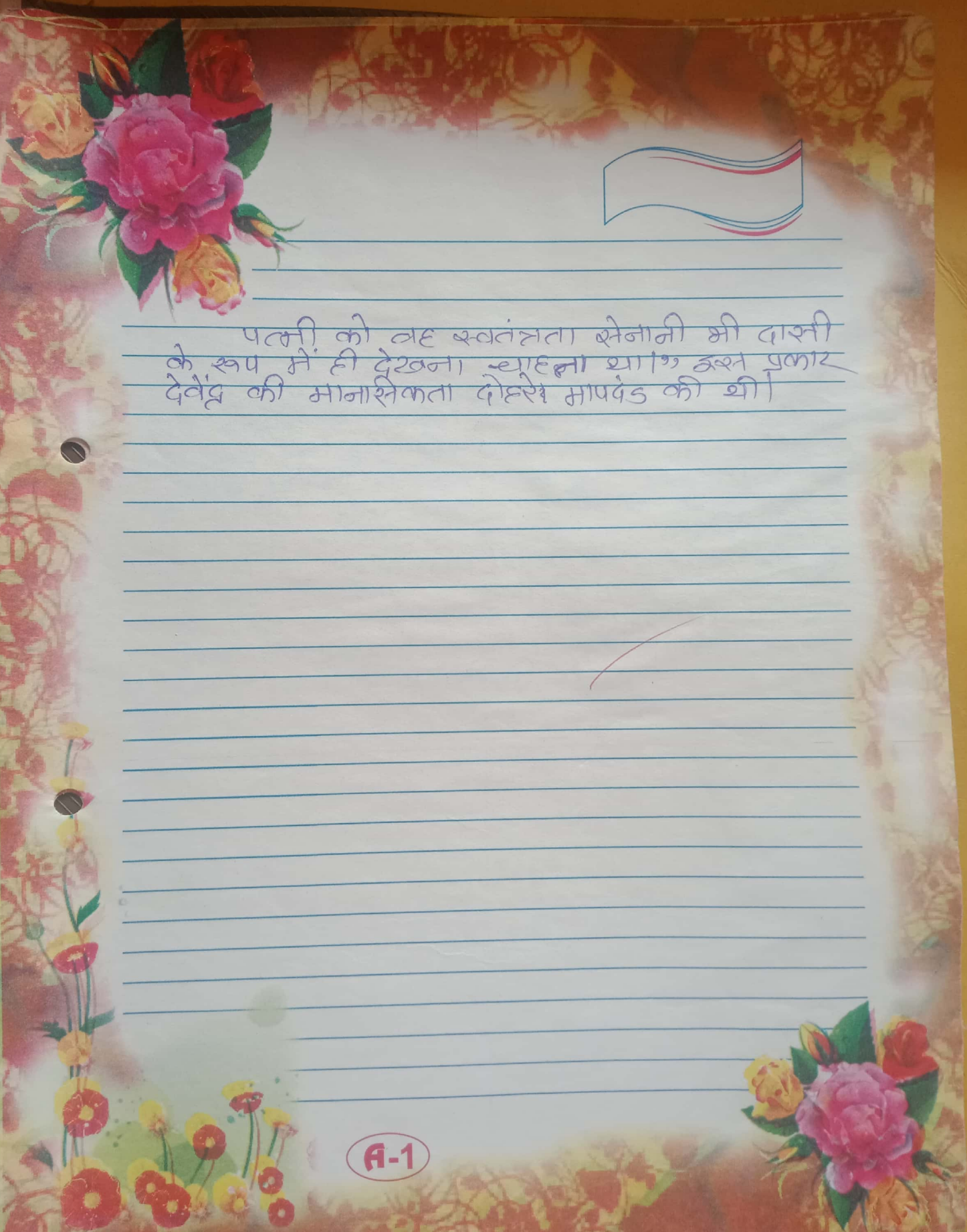
संशयि प्रकृति

देवेन्द्र बाकी और संदेही प्रकृति का आदमी था। उसने अपना पतिहर्म कभी नहीं निभाया। उसका जमरी की छोटी-छोटी बातों में पत्नी पर संदेह करता था। किसी भी बात पर उसे पत्नी पर विश्वास नहीं था। लेखिका के बालों में, वह साबुन भी अपनी अलमारी बंद रखता, चीनी भी बंद, थोड़ी-थोड़ी बीज लड्डू के लिका, चाय के लिका हाक कटोरी में रखता था। अलख खुद राखान, दूध-सबुनी आदि लाता। पकाने के लिका सबुनी टेबल पर निकालकर रखता था। मैं खाना लाने जाने पर खा लेती थी। तब उसने यह ब्रिकायत मेरे भाई से की कि मैं उससे खाना खा पहले खाना खा लेती हूँ। उस प्रकार अपनी पत्नी पर संदेश करनेवाला बाकी आदमी था।

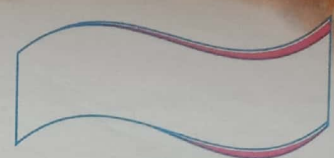



पत्नी को दासी के रूप में देखने की वृत्ति

हाक सामाजिक कार्यकर्ता होकर भी देवेन्द्र अपनी पत्नी को दासी के रूप में देखता था। उच्चशिक्षित पत्नी का अन्याय करता था। रोजमर्रा-नर्रा रूप से पत्नी का धूल करता था। घर खर्च के लिए पत्नी को पैसे नहीं देता। लेखिका के वाक्यों में बहुत लड-झगडकर उलाने मुझे चालीस रूपये महीने देना शुरू किया। जब देवेन्द्र कुमार अपने गाँव बिहारी जाता, तब हाक कागज पर इतने पैसे इधर के इतने रखती, इतने बाबान के और चालीस रूपये तुम्हारी पगार लिखकर रख देता, जैसे मैं वहाँ उनके घर की नौकरानी हूँ। घर का सारा काम करने पर भी पत्नी की प्रशंसा नहीं करता था। कुछ महीने बाद तो उसने चालीस रूपये देना भी बंद किया। घर की नौकरानी को भी बंद किया। लेखिका लिखती है, नौकरानी कपडे छोटी थी, उसे भी देवेन्द्र ने छुडवा दिया। मुझसे कहता कि मैंने तुम्हे पालने का ठेका नहीं लिया है। मैंने कहा, शादी के बाद पत्नी को पालने की जिम्मेवारी पति होती है। मैं भी यहाँ मुझे मैं तो नहीं खाती। यहाँ काम करती हूँ। तब कहता, ग घाहर जाकर काम और खाओ करो और खाओ।



पत्नी की वह स्वतंत्रता सेनानी भी दासी
के रूप में ही देखना चाहना था। इस प्रकार
देवेंद्र की मानसिकता दोहरे मापक की थी।



शास्कार से देवेन्द्र के कार्य की प्रशंसा

उच्चविद्याविभूषित देवेन्द्र डॉ. आलेखकर जी के विचारों से प्रभावी होकर उनके दलित आंदोलन से जुड़ा था। सामाजिक कार्य में स्वयं के कारण अनेक संघर्षों में काम करता था। सरकारी कार्यक्षेत्रों में नियमित किया जाता था। किसानों के आंदोलनों में भी वह सक्रिय रहा है। स्वतंत्रता सेनानी के रूप में भी उसने कार्य किया है। स्वतंत्रता सेनानी के रूप में भी उसने कार्य किया है। वन कार्यों के लिए देवेन्द्र को स्वतंत्रता सेनानी का ताम्रपत्र मिला और पदक पेंशन भी मिलती है। सरकार ने उसके कार्य की प्रशंसा की थी।